Annual Workshop of All India Coordinated Wheat and Barley Project

During Annual Workshop of All India Coordinated Wheat and Barley Project held at College of Agriculture, Maharana Pratap University of Agriculture and Technology (MPUA&T), Udaipur.

During the workshop, Dr Raj Paroda, Former Secretary, DARE and DG, ICAR and currently Chairman, Trust for Advancement of Agricultural Sciences (TAAS) spoke in Inaugural Session about current agricultural scenario in India with particular reference to the growth of wheat and barley in all these years. Different newspapers have published articles based on his speech, details of which can be viewed in following newspapers as stated below:

1. अंतरिक्ष हो या खेत, भारत का वैज्ञानिक श्रेष्ठ : डॉ परोदा in Rajasthan Patrika (1 Sept 2023) from Udaipur;

पत्रिका plus 07 राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 01 सितंबर 2023

पढ़ें ज्यादा खबरें, देखें फोटो/वीडियो
#Readers Connect Udaipur News
facebook.com/groups/udaipurmycity

टॉप मूवीज
- गदर 2 : सन्नी देओल, अमीषा पटेल, उत्कर्ष शर्मा रेटिंग: 8.3
- ओमजी 2 : अक्षय कुमार, पंकज त्रिपाठी, यामी गौतम रेटिंग: 7.3
- ड्रीमगर्ल 2 : आयुष्मान खुराना, अनन्या पांडे, परेश रावल रेटिंग: 6.3
- अकेली : नुशरत भरूच, साही हलेवी, निशांत दहिया रेटिंग: 6.8
- रॉकी और रानी की प्रेम कहानी: रणवीरसिंह, आलिया भट्ट, धर्मेंद्र, शबाना रेटिंग: 7.2
- सत्यप्रेम की कथा: कार्तिक आर्यन, कियारा आडवाणी, गजराज राव रेटिंग: 7.0
- ब्लाइंड : सोनम कपूर, पूरब कोहली, विनय पाठक रेटिंग: 4.1

टॉप ओटीटी
- द ट्रायल : काजोल, जिशु सेनगुप्ता, कुब्रा सेठ, शीबा चड्ढा, अली खान, ओटीटी : डिज़्नी प्लस हॉट स्टार रेटिंग : 5.3
- अधूरा : इश्वाक सिंह, रसिका दुग्गल, श्रेणिक अरोड़ा ओटीटी : प्राइम वीडियो रेटिंग : 6.7
- केरला क्राइम फाइल्स : देवकी राजेदन, अश्वथी मनोहरन, ईका देव ओटीटी: डिज्नी+ हॉटस्टार रेटिंग : 7.3
- ये मेरी फैमिली : विशेष बंसल, मोनासिंह , प्रसाद रेड्डी ओटीटी: अमेजन मिनी टीवी

#NationalWorkshop गेहूं व जौ अनुसंधान पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला सम्पन्न

अंतरिक्ष हो या खेत, भारत का वैज्ञानिक श्रेष्ठ : डॉ. परोदा

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

उदयपुर. राजस्थान कृषि महाविद्यालय सभागार में तीन दिवसीय राष्ट्रीय गेहूं और जौ अनुसंधान कार्यशाला का समापन समारोह आयोजित हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि पद्मभूषण सम्मानित एवं भारतीय कृषि परिषद के पूर्व महानिदेशक एवं चेयरमेन डॉ. आरएस परोदा ने कहा कि अंतरिक्ष हो या खेत भारत के वैज्ञानिकों ने हर जगह देश का गौरव बढ़ाया है। कृषि वैज्ञानिकों को इस बात पर ध्यान केन्द्रित करना होगा कि आदान की कीमतें घटें व उत्पादन बढ़े। साथ ही उत्पादन को सीधा बाजार से जोड़ा जाएं और यह कमान युवा वैज्ञानिकों को सौंपी जाएं। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन में देश प्रतिवर्ष 5-6 मिलियन टन की वृद्धि कर रहा है। साथ ही 50 से 70 मिलियन टन का बफर स्टॉक भी हमारे पास है ताकि कोई भी विपश्रि आए तो देश में अनाज की कमी नहीं रहे। परोदा का कहना था कि राजस्थान जैसे मरूप्रदेश में मूंग, मोठ, बाजरा, मेथी व जीरा आदि की भरपूर पैदावार होती है। पाली में तैयार गेहूं किस्म 'खरचीय-65' क्षार रोधी है, जिसका भौगोलिक पेटेन्ट भी करा लिया गया है। हमारे पास भरपूर पानी हैं, उत्कृष्ट बीज है,, श्रेष्ठ उर्वरक है, श्रेष्ठतम कृषि वैज्ञानिक है, विशाल सोच है और आइसीएआर है तो फिर इन सबका उपयोग कर देश को और आगे ले जाने व नए कीर्तिमान स्थापित करने का काम होना चाहिए। उन्होंने युवा छात्रों और कृषि क्षेत्र में काम कर रहे नौजवान वैज्ञानिकों से कहा कि अब बारी उनकी है। देश के युवा वैज्ञानिकों को चाहिए कि संरक्षित कृषि को बाजार से जोड़ें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर कुलपति डॉ. पी.एल. गौतम ने कहा कि बच्चों में शुरू से ही शिक्षा के अलावा उद्यमिता पर जोर देना चाहिए। इससे न केवल समग्र विकास होगा बल्कि वे देश की तरक्की में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने युवा वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे सतत शोध अनुसंधान करते हुए खाद्यान्न उत्पादन में देश को नई ऊंचाइयां प्रदान करें। देश को 2047 तक विकासशील से विकसित देश बनाने का लक्ष्य हमारे सामने हैं। इसे पूरा करने के लिए तकनीकी विकास, प्रसार और स्थिरीकरण पर कार्य करना होगा।

इससे पूर्व एमपीयूएटी के छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से छात्र वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्र कल्याण अधिकारी डॉ. मनोज महला ने बताया कि कार्यक्रम में डॉ. अरविन्द वर्मा, निदेशक अनुसंधान, डॉ. अमित त्रिवेदी, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, डॉ. रवि कान्त शर्मा, सहायक निदेशक अनुसंधान, डॉ. अभय दशोरा, सह कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. जगदीश चौधरी, गेहूं वैज्ञानिक एवं डॉ. उर्मिला आदि उपस्थित रहे।

राजस्थान कृषि महाविद्यालय सभागार में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में अतिथि का स्वागत करते कुलपति। पत्रिका

क्यूआर कोड स्कैन कर विस्तृत खबर पढ़ें...

2. भारतीय वैज्ञानिकों ने खेत से आकाश तक श्रेष्ठता साबित की, अब युवा इसे आगे ले जाएँ : डॉ परोदा
Dainik Bhaskar (Hindi) -31 august 2023 from Udaipur, Udaipur Express

सुविचार
जो बड़ी नाकामी सहने की हिम्मत रखते हैं, वही बड़ी कामयाबी हासिल कर सकते हैं।

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

कुल पेज 18 राजस्थान मूल्य ₹ 5.00 | वर्ष 26, अंक 92, महानगर

सेंसेक्स 65,087.25 +11.43
डॉलर 82.74 -0.06
मानसून: देश में औसतन 628.7 मिमी बारिश
अब तक | कम/ज्यादा
उदयपुर 463.71 मिमी -30.89 मिमी
• पिछले साल तक 765.41 मिमी बारिश हुई थी।
आकोदड़ा बांध
फुल टैंक लेवल 60 फीट | आज तक 59.2 फीट

dainikbhaskar.com उदयपुर, गुरुवार, 31 अगस्त, 2023 द्वितीय श्रावण (शुद्ध) शुक्ल पक्ष-पूर्णिमा, 2080 12 राज्य | 61 संस्करण

राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन • आईसीएआर के पूर्व महानिदेशक एवं टास के चेयरमैन समेत कई कृषि वैज्ञानिक आए

भारतीय वैज्ञानिकों ने खेत से आकाश तक श्रेष्ठता साबित की, अब युवा इसे आगे ले जाएं : डॉ परोदा

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

आबादी में 4 गुना तो अनाज उत्पादन में साढ़े 6 गुना बढ़त, 70 मिलियन टन गेहूं का बफर स्टॉक भी

आसमान हो या खेत, भारतीय वैज्ञानिकों ने हर जगह देश का गौरव बढ़ाया है। आजादी के बाद आबादी साढ़े चार गुना बढ़ी तो कृषि वैज्ञानिकों ने खाद्यान्न उत्पादन में साढे छह गुना बढ़ोतरी कर अपने हुनर का लोहा मनवाया है। चंद्रयान-3 की सफलता चंद्रमा पर हमारी प्रतिभा का प्रमाण है। अब कृषि वैज्ञानिकों को इस बात पर ध्यान देना होगा कि आदान की कीमतें घटें और उत्पादन बढ़े। साथ ही उत्पादन को सीधा बाजार से जोड़ा जाए और यह कमान युवा वैज्ञानिकों को सौंपी जाए।

यह बात पद्म भूषण से सम्मानित एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक एवं ट्रस्ट फॉर एडवांसमेंट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (टास) के चेयरमैन डॉ. आर.एस. परोदा ने कही। डॉ. परोदा बुधवार को राजस्थान कृषि महाविद्यालय सभागार में गेहूं व जौ अनुसंधान विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हर बच्चा सपना देखे, लेकिन सोच वैश्विक रखे।

डॉ. परोदा ने गौरव के साथ कहा कि वे खुद राजस्थान कृषि महाविद्यालय के पूर्व छात्र रहे हैं और जो सपने उन्होंने देखे, उन्हें साकार होते भी देखा है। अब युवा छात्रों और कृषि क्षेत्र में काम कर रहे युवा वैज्ञानिकों की बारी है।

एमपीयूएटी के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप के त्याग, देश प्रेम को आत्मसात करते हुए युवा वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे लगातार शोध-अनुसंधान करते हुए देश को नई ऊंचाइयां दिलाएं।

डॉ. परोदा ने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन में देश प्रतिवर्ष 5-6 मिलियन टन की वृद्धि कर रहा है। साथ ही 50 से 70 मिलियन टन का बफर स्टॉक भी हमारे पास है। राजस्थान जैसे मरुप्रदेश में मूंग, मोठ, बाजरा, मेथी, जीरा आदि की भरपूर पैदावार होती है। हमारे पास भरपूर पानी, उत्कृष्ट बीज, श्रेष्ठ उर्वरक और श्रेष्ठतम कृषि वैज्ञानिक हैं। विशाल सोच है और आई.सी.ए.आर. है तो फिर इन सबका उपयोग कर देश को और आगे ले जाने व नए कीर्तिमान स्थापित करने का काम होना चाहिए।

अध्यक्षता आईसीएआर के पूर्व निदेशक व गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के पूर्व कुलपति डॉ. पी.एल. गौतम ने की। उन्होंने कहा कि बच्चों में शुरू से ही शिक्षा के अलावा उद्यमिता पर जोर देना चाहिए। इससे न केवल समग्र विकास होगा बल्कि वे देश की तरक्की में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे। युवा कृषि वैज्ञानिक इसी रफ्तार से अपने कर्म में जुटे रहेंगे तो सुपरिणाम मिले है और भी सुखद परिस्थितियां बनेंगी।

ब्रेकफास्ट, लंच एवं डिनर में मिलेट्स के व्यंजन, सबने की तारीफ

इससे पहले एमपीयूएटी के छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से छात्र वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम हुआ।

छात्र कल्याण अधिकारी डॉ. मनोज महला ने बताया कि कार्यशाला में प्रतिभागियों को ब्रेकफास्ट, लंच एवं डिनर में मोटे अनाज से बने व्यंजन परोसे गए, जिन्हें सबने पसंद किया। निदेशक अनुसंधान डॉ. अरविंद वर्मा, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ. अमित त्रिवेदी, सहायक निदेशक अनुसंधान डॉ. रवि कांत शर्मा, सह कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अभय दशोरा, डॉ. जगदीश चौधरी, डॉ. उर्मिला आदि मौजूद थे।

3. देश की आबादी साढ़े 4 गुना, खाद्यान्न उत्पादन 6.50 गुना बढ़ा Dainik Nav Jyoti (31 August 2023) from Udaipur

अजमेर, कोटा और जयपुर से प्रकाशित
@DailyNavajyoti @DainikNavajyotiNews feedback@dainiknavajyoti.com dainiknavajyoti
संस्थापक : स्व. कपूरचन्द्र दुर्गाप्रसाद चौधरी
दैनिक नवज्योति
Since 1936
उदयपुर
गुरुवार, 31 अगस्त, 2023
निर्भीक और निष्पक्ष
आपके लिए, आपके साथ
नगर संस्करण वर्ष 10 | अंक 246
श्रावण, शुक्लपक्ष, पूर्णिमा/भाद्रपद, कृष्णपक्ष,प्रतिपदा, संवत 2080
dainiknavajyoti.com
मूल्य 3.00

उपलब्धि : 50 से 70 मिलियन टन गेहूं का अतिरिक्त स्टॉक तैयार, गेहूं-जौ अनुसंधान पर राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

देश की आबादी साढ़े 4 गुना, खाद्यान्न उत्पादन 6.50 गुना बढ़ा

स्पेशल नवज्योति/उदयपुर। अंतरिक्ष हो या खेत-भारत के वैज्ञानिकों ने हर जगह देश का गौरव बढ़ाया है। आजादी के बाद आबादी में साढ़े चार गुणा वृद्धि हुई है तो कृषि वैज्ञानिकों ने खाद्यान्न उत्पादन में साढ़े छह गुणा बढ़ोतरी कर लोहा मनवाया है। यह बात बुधवार को पद्म भूषण से सम्मानित एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्व महानिदेशक एवं चेयरमेन डॉ. आरएस परोदा ने कही। अवसर था गेहूं व जौ पर अखिल भारतीय अनुसंधान कार्यशाला के सम्मान का। डॉ. परोदा ने कहा कि हर बच्चा सपना देखे, लेकिन सोच वैश्विक रखे। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन में देश प्रतिवर्ष 5-6 मिलियन टन की वृद्धि कर रहा है। साथ ही 50 से 70 मिलियन टन का बफर स्टॉक भी आज हमारे पास है ताकि कोई भी विपत्ति आए तो देश में अनाज की कमी नहीं रहे। अध्यक्षता करते हुए पूर्व उप महानिदेशक आईसीएआर

डॉ. पीएल गौतम ने कहा कि बच्चों में शुरू से ही शिक्षा के अलावा उद्यमिता पर जोर देना चाहिए। इससे न केवल समग्र विकास होगा बल्कि वे देश की तरक्की में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे।

छात्र-वैज्ञानिक संवाद: एमपीयूएटी के छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से छात्र वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम हुआ। छात्र कल्याण अधिकारी डॉ. मनोज महला ने बताया कि इस मौके पर डॉ. परोदा, डॉ. पीएल गौतम एवं कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक उपस्थित थे। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को ब्रेकफास्ट, लंच एवं डिनर में मोटे अनाज से बने व्यंजनों का परोसा गया।

कार्यक्रम में डॉ. अरविन्द वर्मा, निदेशक अनुसंधान, डॉ. अमित त्रिवेदी, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, डॉ. अभय दशोरा, सह कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. जगदीश चौधरी, गेहूं वैज्ञानिक एवं डॉ. उर्मिला आदि उपस्थित रहे।

मुख्य सिफारिशें

- गेहूं प्रजनन परीक्षणों में सभी प्रविष्टियों को महत्वपूर्ण क्षेत्रता के आधार पर आगे बढ़ाया जाएगा।
- अग्रिम प्रजनन प्रविष्टियों के परीक्षण जोकट कोर्डिनेटिंग यूनिट अपने यहीं बनाएंगे।
- मध्य क्षेत्र में डायकोकम गेहूं पर विशेष परीक्षण शुरू होगा। एनआईजीटी-4 परीक्षण उत्तर पश्चिमी मैदानी भागों में भी करेंगे।
- गेहूं में गुणवत्ता घटक और जैव संवर्धित नर्सरी की शुरुआत करने की सिफारिश की गई।
- गेहूं में रतुआ, तना रतुआ व हेड स्कैब के नियंत्रण के लिए टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत और ट्राइफ्लोक्सिस्ट्रोबिन 25 प्रतिशत दवा के 0.06 प्रतिशत घोल के छिड़काव की सिफारिश की गयी।
- गेहूं मे पत्ती झुलसा के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत व ट्राईफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25 प्रतिशत का 0.1 प्रतिशत घोल के छिड़काव की सिफारिश की गई।
- गेहूं जौ में सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए पाइरोक्सासल्फोन या पेंडिमेथेलिन / 127.05 व 1250 ग्राम प्रति हेक्टेयर या पाइरोक्सासल्फोन, मैट्रीब्यूजिन / 127.05, 280 ग्राम प्रति हेक्टेयर की सिफारिश की गई।
- अगर जमाव से पहले छिड़काव नहीं किया गया तो पहली सिंचाई से पहले पाईरोक्सासल्फोन, मेटसल्फयूरोन 127.5, 4 ग्राम प्रति हेक्टेयर की सिफारिश सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए की गई।

4. अंतरिक्ष हो या खेत, भारत का वैज्ञानिक श्रेष्ठ : डॉ परोदा in Udaipur Express (1 Sept 2023) from Udaipur;

उदयपुर एक्सप्रेस

अंतरिक्ष हो या खेत, भारत का वैज्ञानिक श्रेष्ठः डॉ. परोदा

उदयपुर। अंतरिक्ष हो या खेत- भारत के वैज्ञानिकों ने हर जगह देश का गौरव बढ़ाया है। आजादी के बाद आबादीं में साढ़े चार गुणा वृद्धि हुई है तो कृषि वैज्ञानिकों ने खाद्यान्न उत्पादन में साढे छः गुणा बढ़ोतरी कर अपने हुनर का लोहा मनवाया है। अब कृषि वैज्ञानिकों को इस बात पर ध्यान केन्द्रित करना होगा कि आदान की कीमतें घटे व उत्पादन बढ़े। साथ ही उत्पादन को सीधा बाजार से जोड़ा जाए और यह कमान युवा वैज्ञानिकों को सौंपी जाए। यह बात बुधवार को पद्म भूषण से सम्मानित एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक एवं चेयरमेन 'टास' डॉ. आर. एस. परोदा ने कही।

राजस्थान कृषि महाविद्यालय सभागार में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय गेहूँ व जौ अनुसंधान कार्यशाला के समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. परोदा ने कहा कि हर बच्चा सपना देखे, लेकिन सोच वैश्विक रखे। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन में देश प्रतिवर्ष का बफर स्टॉक भी आज हमारे पास है ताकि कोई भी विपत्ति आए तो देश में अनाज की कमी नहीं रहे। परोदा का कहना था कि राजस्थान जैसे मरूप्रदेश में मूंग, मोठ, बाजरा, मैथी व जीरा आदि की भरपूर पैदावार होती है। पाली में तैयार गेहूँ 'खरचीय-65' क्षाररोधी है जिसका भौगोलिक पेटेन्ट भी करा लिया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व उप महानिदेशक आईसीएआर एवं पूर्व कुलपति, गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर, डॉ. पी.एल. गौतम ने कहा कि बच्चों में शुरू से ही शिक्षा के अलावा उद्यमिता पर जोर देना चाहिए। इससे न केवल समग्र विकास होगा बल्कि वे देश की तरक्की में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप के त्याग, देशप्रेम को आत्मसात करते हुए युवा वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे सतत् शोध अनुसंधान करते हुए खाद्यान्न उत्पादन में देश को नई ऊचाँईयां प्रदान करें। उनका कहना था कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में गेहूँ का अविस्मरणीय योगदान है।

छात्र-वैज्ञानिक संवादः इससे पूर्व एमपीयूएटी के छात्र कल्याण निदेशालय की और से छात्र वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्र कल्याण अधिकारी डॉ. मनोज महला ने बताया कि इस मौके पर कृषि जगतके नामचीन पद्म भूषण वैज्ञानिक डॉ. आर. एस. परोदा व डॉ. पी. एल. गौतम एवं कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक उपस्थित थे। कार्यक्रम में डॉ. अरविन्द वर्मा, निदेशक अनुसंधान, डॉ. अमित त्रिवेदी, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, डॉ. रवि कान्त शर्मा, सहायक निदेशक अनुसंधान, डॉ. अभय दशोरा, सह कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. जगदीश्ज्ञ चैधरी, गेहूँ वैज्ञानिक एवं डॉ. उर्मिला आदि उपस्थित रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत सिंहपर पंचायत स

5. आबादी साढ़े 4 गुना बढ़ी , तो खाद्यान्न उत्पादन 6.50 गुना हुई बढ़ोत्तरी Mahanagar Times (31 August 2023) from Udaipur

जयपुर
मिशन पत्रकारिता का प्रहरी
महानगर टाइम्स

Udaipur Mahanagar Times 31Augu...

गेहूँ, जौ अनुसंधान पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

आबादी चार गुना बढ़ी तो खाद्यान्न उत्पादन साढ़े छह गुना हुई बढ़ोतरी

महानगर संवाददाता

उदयपुर। अंतरिक्ष हो या खेत, भारत के वैज्ञानिकों ने हर जगह देश का गौरव बढ़ाया है। आजादी के बाद आबादी में साढ़े चार गुणा वृद्धि हुई तो कृषि वैज्ञानिकों ने खाद्यान्न उत्पादन में साढे छह गुणा बढ़ोत्तरी कर अपने हुनर का लोहा मनवाया। अब कृषि वैज्ञानिकों को इस बात पर ध्यान केन्द्रित करना होगा कि आदान की कीमतें घटें व उत्पादन बढ़े। साथ ही उत्पादन को सीधा बाजार से जोड़ा जाए और यह कमान युवा वैज्ञानिकों को सौंपी जाए।

यह बात बुधवार को पद्मभूषण एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के पूर्व महानिदेशक एवं चेयरमेन टास डॉ आरएस परोदा ने कही। राजस्थान कृषि महाविद्यालय सभागार में तीन दिवसीय राष्ट्रीय गेहूँ व जौ अनुसंधान कार्यशाला के समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ परोदा ने कहा हर बच्चा सपना देखे लेकिन सोच वैश्विक रखे। खाद्यान्न उत्पादन में देश प्रतिवर्ष 5.6 मिलियन टन की वृद्धि कर रहा है। साथ ही 50 से 70 मिलियन टन का बफर स्टॉक भी हमारे पास है ताकि कोई भी विपत्ति आए तो देश में अनाज की कमी नहीं रहे। राजस्थान जैसे मरूप्रदेश में मूंग, मोठ, बाजरा, मैथी व जीरा आदि की भरपूर पैदावार होती है। पाली में तैयार गेहूँ किस्म खरचीय.65 क्षारोधी है, जिसका भौगोलिक पेटेन्ट भी करा लिया गया है। हमारे पास भरपूर पानी, उत्कृष्ट बीज, श्रेष्ठ उर्वरक, श्रेष्ठतम कृषि वैज्ञानिक, विशाल सोच और आईसीएआर है तो फिर इन सबका उपयोग कर देश को और आगे ले जाने व नए कीर्तिमान स्थापित करने का काम होना चाहिए। युवा छात्रों और कृषि क्षेत्र में काम कर रहे नौजवान वैज्ञानिकों से कहा अब बारी उनकी है। देश के युवा वैज्ञानिकों को चाहिए कि संरक्षित कृषि को बाजार से जोड़े। अध्यक्षता करते हुए पूर्व उप महानिदेशक आईसीएआर एवं पूर्व कुलपति, गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर डॉ पीएल गौतम ने कहा बच्चों में शुरू से ही शिक्षा के अलावा उद्यमिता पर जोर देना चाहिए। इससे न केवल समग्र विकास होगा बल्कि वे देश की तरक्की में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीतकुमार कर्नाटक ने युवा वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे सतत शोध अनुसंधान करते हुए खाद्यान्न उत्पादन में देश को नई ऊचाँइयां प्रदान करें। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में गेहूँ का अविस्मरणीय योगदान है। गेहूँ से जुड़े समसायिक मुद्दे यथा प्राकृतिक खेती, खाद्य उत्पादों में गेहूँ का समावेश, बॉयो फोर्टिफिकेशन, पारिस्थिकी तंत्र, स्वास्थ्य, जैविक व अजैविक तनाव आदि पर भी ध्यान देना जरूरी है। कुलपति ने कहा युवा वैज्ञानिकों को गेहूँ व जौ उत्पादन से जुड़े किसानों की समस्याओं का भी अध्ययन कर उनके समाधान की दिशा में काम करना होगा। देश को 2047 तक विकासशील से विकसित देश बनाने का लक्ष्य हमारे सामने है। इसे पूरा करने के लिए तकनीकी विकास, प्रसार और स्थिरीकरण पर कार्य करना होगा। इससे पूर्व एमपीयूएटी के छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा छात्र वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम हुआ। छात्र कल्याण अधिकारी डॉ मनोज महला ने बताया डॉ परोदा, डा गौतम, एवं डॉ कर्नाटक की उपस्थिति में प्रतिभागियों को ब्रेकफास्ट, लंच एवं डिनर में मोटे अनाज के व्यंजन परोसे तो सभी ने इनको पसन्द किया और प्रशंसा की। कार्यक्रम में डॉ अरविन्द वर्मा निदेशक अनुसंधान, डॉ अमित त्रिवेदी, क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ रविकान्त शर्मा, सहायक निदेशक अनुसंधान, डॉ अभय दशोरा, सह कार्यक्रम समन्वयक डॉ जगदीश चौधरी, गेहूँ वैज्ञानिक, डॉ उर्मिला आदि उपस्थित रहे।

यह उभरी कार्यशाला की मुख्य सिफारिशें

प्रजनन परीक्षणों में सभी प्रविष्टियों को महत्वपूर्ण श्रेष्ठता पर बढ़ाया जाएगा, अग्रिम प्रजनन प्रविष्टियों के परीक्षण जोनल कोर्डिनेटिंग यूनिट अपने यहीं बनायेगी, मध्य क्षेत्र में डायकोकम गेहूँ पर विशेष परीक्षण शुरू किया जाएगा, एनआईवीटी.4 परीक्षण उत्तर पश्चिमी मैदानी भागों में भी होंगे, गुणवत्ता घटक और जैव संवर्धित नर्सरी की शुरूआत की जाए, गेहूँ में पश्री रतुआ, तना रतुआ व हेड स्कैब के नियंत्रण के लिए टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत ट्राईफ्लोक्सि स्ट्राबिन 25 प्रतिशत दवा के 0.06 प्रतिशत घोल का छिड़काव हो, गेहूँ में पश्री ब्लुलसा के नियत्रंण हेतु टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत .ट्राईफ्लोक्सीस्ट्राबिन 25 प्रतिशत का 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव, गेहूँ में सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए पाईरोक्सासल्फोन .पेंडिमेथेलिन 127.05 .1250 ग्राम प्रति हेक्टेयर या पाईरोक्सासल्फोन .मैट्रीब्यूज़िन 127.05 280 ग्राम प्रति हेक्टेयर, अगर जमाव से पहले छिड़काव नहीं किया तो पहली सिंचाई से पहले पाईरोक्सासल्फोन . मेटसल्फ्यूरोन 127.5 4 ग्राम प्रति हेक्टेयर की सिफारिश सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए की गई। इसी तरह कार्यशाला में उत्तर पश्चिमी मैदानी भागों में सिंचित व समय से बुवाई के लिए गेहूँ की एचडी.3386 तथा सीमित सिंचाई के लिए डब्ल्यू एच.1402 की पहचान करते हुए उत्तर पूर्वी मैदानी भागों में सिंचित व समय से बुवाई के लिए गेहूँ की एचडी-3388 की पहचान की गई। साथ ही मध्य क्षेत्र में सिंचित व समय से बुवाई के लिए गेहूँ की सीजी.1040 की पहचान कर डीबीडब्ल्यू. 327 का उच्च उर्वरता दशा के लिए क्षेत्र विस्तार किया गया।

प्रायद्वीपीय क्षेत्र में सिंचित व समय से बुवाई के लिए गेहूँ की एमपी.1378 तथा सीमित सिंचाई के लिए डीबीडब्ल्यू .359 की पहचान कर उत्तर पश्चिमी मैदानी भागों में सिंचित व समय से बुवाई के लिए जौ की डीडब्ल्यूआरबी. 219 की पहचान की गई।